शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 70-87

कथाकार होमेन बरगोहाञि का 'पिता-पुत्र' : एक समीक्षात्मक अध्ययन

✍ संजीव मण्डल

शोध-सार :

'पिता-पुत्र' उपन्यास होमेन बरगोहाञि की प्रौढ़तम कृति है। इसमें पीढ़ी-संघर्ष, आभिजात्य का टूटना या शक्ति-केंद्र के स्थानांतरण, भ्रष्टाचार, नशाखोरी सभी कुछ चित्रित हुआ है। 'पिता-पुत्र' पिता शिवनाथ और उनके तीन पुत्र गौरीनाथ, कालिनाथ और लक्ष्मीनाथ की कहानी पर आधारित है। पीढ़ी-संघर्ष के तौर पर गौरीनाथ अपने पिता के आदेश के विपरीत अपनी कैवर्त जाति की प्रेमिका से विवाह करता है। छोटा पुत्र लक्ष्मीनाथ शराबी, जुआरी बनकर शिवनाथ और बाकी परिवारवालों पर मानसिक और शारीरिक अत्याचार करता है। कालिनाथ अपने पिता का सहारा बनने के लिए अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर गुवाहाटी से महँघूलि आ जाता है। कालिनाथ महँघूलि से शराब और अफीम का गोरखधंधा खत्म करने का बहुत प्रयास करता है। इसी प्रयास में वह चुनाव लड़कर विधायक और मंत्री भी बन जाता है। उपन्यास में जाति-भेद प्रथा पर भी चोट की गई है। कैवर्त गाँव के लोगों के साथ तथाकथित ऊँची जाति के लोगों का भेदभाव भी उपन्यास में चित्रित हुआ है। परम्पराओं के टूटने और महँघूलि में एक परम्परा मुक्त नये समाज के अस्तित्व में आने की कहानी भी कहता है यह उपन्यास।

बीज-शब्द : *'पिता-पुत्र', पीढ़ी-संघर्ष, आभिजात्य, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, जातिगत भेदभाव।*

1. प्रस्तावना :

'पिता-पुत्र' उपन्यास की रचना असमीया के यशस्वी कथाकार एवं पत्रकार होमेन बरगोहाञि (सन् 1932ई॰- सन् 2021ई॰) ने की है। इस उपन्यास को सन् 1978 ई॰ का असमीया भाषा का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। समाज में शक्ति-केंद्र के स्थानांतरण की कहानी कहने का प्रयास इस उपन्यास के माध्यम से हुआ है। भ्रष्ट राजनीति तथा नशाखोरी की समस्या का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है।

उपन्यास की कथानक की शुरुआत स्वतंत्रता के कुछ पहले से होती है और सन् 1972 ई॰ तक चलता है। वैसे उपन्यास में शिवनाथ के बचपन की यादों के माध्यम से 20वीं सदी के प्रारम्भिक सालों का भी वर्णन मिलता है। उपन्यास के प्रमुख पात्रों में शिवनाथ, शिवनाथ के तीन पुत्र - बड़ा गौरीनाथ, मझला कालिनाथ और छोटा लक्ष्मीनाथ, शिवनाथ की पुत्री रम्भा, शिवनाथ की पत्नी, केशव मण्डल, रेब महाजन, दिवाकर, बहागी आदि प्रमुख हैं।

2. विश्लेषण :

'पिता-पुत्र' उपन्यास कथ्य और अभिव्यक्ति- दोनों दृष्टियों से एक विशिष्ट उपन्यास है। इस उपन्यास की विशेषताओं को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

2.1. पीढ़ी-संघर्ष :

शिवनाथ के तीनों पुत्र विद्रोही स्वभाव के युवक हैं। गौरीनाथ एक कैवर्त जाति की युवती से अपने पिता की इच्छा और आदेश के विरुद्ध विवाह करके अपने पिता और समाज की रूढ़ि प्रथा से विद्रोह करता है। छोटा बेटा लक्ष्मीनाथ लफंगा और निकम्मा निकलता है। वह शराबी बन जाता है और अपने परिवार वालों को अपने व्यवहार से तंग कर देता है। उसकी वजह से शिवनाथ और उनकी पत्नी की शांति छीन जाती है। वह मानो अपने जीवन से ही विद्रोह करके असामाजिक तत्व बन जाता है। वहीं कालिनाथ अपने पिता का सहारा बनता है और समाज में फैले भ्रष्टाचार, अन्याय-अत्याचार के विरुद्ध जूझकर समाजिक और राजनीतिक क्षेत्र के खल तत्वों से विद्रोह करता है।

शिवनाथ को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो किताबें पढ़ते हैं, नई रोशनी में समाज को देखना चाहते हैं, पर समाज की पुरातन परम्पराओं का पालन करना अपना धर्म मानते हैं। गौरीनाथ के इस कथन से यह बात हमें पता चलती है कि शिवनाथ अपनी आस-पास की दुनिया की खबर नहीं रखते -

> देउता, समाजत बास करिले समाजर किछु खबर राखिब लागे। तुमि तोमार चारिओफाले आभिजात्यर ओख देवाल एखन थिय कराइ लै निजर जगतखनत अकले बास

करा; तोमार चारिओफाले प्रतिमुहूर्तते कि घटिब धरिछे तार एको खबर नाराखा।

(बरगोहाञि 2014:87)

(भावार्थ: पिताजी, समाज में रहने पर समाज की कुछ खबर रखनी चाहिए। आप अपने चारो ओर आभिजात्य की ऊँची दीवार खड़ी कर अपनी दुनिया में अकेले रमे रहते हैं, आपके चारो ओर हर पल क्या घट रहा है उसकी कोई खबर नहीं रखते ।)

शिवनाथ घर से भी ज्यादा नहीं निकलते। वे अपने बरामदे में बैठे उनके घर के सामने से गुजरने वाले लोगों को कभी-कभी बुलाकर बात कर लेते हैं और उन्हीं से जो कुछ पता चलता है वही बाहरी दुनिया के समाचार प्राप्त करने का उनका जरिया है ।

2.2. कांग्रेसियों का सत्ता लोभ :

उपन्यास में स्वतंत्रता से पूर्व कांग्रेसी बनकर बड़े से बड़े त्याग करने वाले व्यक्ति को स्वतंत्रता के बाद अपने उन्हीं त्यागों का मूल्य प्राप्त करने के लिए घोर सुविधावादी बनते हुए दिखाया गया है। ऐसे निस्थावान, ईमानदार और त्यागी व्यक्तियों का ऐसा परिवर्तन देखकर आश्चर्य होता है। केशव मण्डल ऐसा ही पात्र है। वह '42 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में जेल जाता है। उसके त्याग को देखकर शिवनाथ भी बहुत प्रभावित होते हैं और उन्हें ग्लानि भी होती है कि वे क्यों ऐसा त्याग करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए। शिवनाथ केशव मण्डल से अपनी इस ग्लानि को प्रकट करते हुए कहते हैं --

देशर कारणे सर्बस्व त्याग करि तुमि ओलाइछा जेललै आरु बिषय-सम्पत्ति कामुरि मइ परि थाकिम घरते, तिरोतार आदर खाइ खाइ। जीवनत बुजाइ-नुबुजाइ केवल कितापेइ पढ़िलो; नाना कथा जानिलो, नाना कथा मनते पागुलिलो, किंतु कामर समयत ठनठन मदनगोपाल, कुटा एगछो निछिडिलो कामर नामत। किताप एखन मेलि लॅबलै बा कथा पेघेनियाबलै जीवनत तोमार समय नहॅल; किंतु येइ कामर आह्वान आहिल, सकलो दलि मारि थै तुमि दौरि आहिला कामर दायित्व कांध पाति लॅबलै।

(बरगोहाञि 2014:33)

(भावार्थ: देश के लिए सर्वस्व त्याग करके तुम निकले हो जेल जाने और धन-सम्पत्ति के मोह में मैं पड़ा रहूँगा घर में ही, पत्नी के स्नेह में पड़कर। जीवन में मैंने समझ में आया हो या न आया हो केवल किताब ही पढ़ा; तरह-तरह की बातें जानी, तरह-तरह की बात सोचता रहा, पर काम के समय हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा, एक पत्ता भी नहीं तोड़ा काम के नाम पर। एक किताब पढ़ने या किसी विषय पर बहस करने का तुम्हारे जीवन में समय नहीं हुआ, किंतु जैसे ही कर्तव्य का

बुलावा आया, सबकुछ छोड़कर तुम दौड़े आए जिम्मेदारी निभाने ।)

पर कैसी बिडम्बना है कि वही केशव मण्डल स्वतंत्रता आंदोलन के घोर विरोधी और अंग्रेज भक्त रेब महाजन के साथ राजनीतिक सुविधा और सत्ता पाने के लिए गँठजोड़ करता है। वैसे केशव मण्डल पटवारी का काम करता था। वह बहुत ही भ्रष्ट अधिकारी था। दरिद्र जनों को सताना, लोगों से घूस लेना आदि उसके लिए बहुत ही स्वभाविक से काम थे। वही केशव मण्डल जब स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रसी बनाकर जेल जाता है तब शिवनाथ का प्रभावित होना और आश्चर्यचकित होना भी स्वभाविक ही है। पर उसकी यह देश भक्ति ढकोसला था। भारत की स्वतन्त्रता के बाद वह अपने त्याग का पूरा मूल्य बसूलने में कोई कसर नहीं छोड़ता।

2.3. शक्ति-केंद्रों का स्थानांतरण :

समाज में शक्ति-केंद्रों के स्थानांतरण की बात भी यहाँ गौर करने योग्य है। सदियों से शिवनाथ का परिवार आर्थिक रूप से सम्पन्न,गरिमामय, प्रभावशाली और शक्तिसम्पन्न परिवार था। समाज में इस परिवार का बहुत मान और रुतबा था। पर स्वतंत्रता के बाद शिवनाथ का परिवार धीरे-धीरे अपना प्रभाव और शक्ति खो देता है और इसका कारण समाज में उभरते नये शक्ति केंद्र और आकार लेती नई समाज-व्यवस्था थी।

होमेन बरगोहाञि के कई उपन्यासों की तरह असम का महँघूलि नामक स्थान ही इस उपन्यास की कथा का केंद्र है। स्वतंत्रता के बाद महँघूलि पहले का निर्जन, शांत महँघूलि नहीं रह जाती। अब यहाँ की यातायात-व्यवस्था दुरुस्त हो जाने के कारण बाहर से लोगों का आना-जाना अधिक होने लगता है और बाहर से लोग आकर महँघूलि में बसने भी लगते हैं। उपन्यासकार ने कहा है -

> योवा केइबछरमानर आगते मँहघूलि आरु महकुमार सदर चहरर माजत एटा नतुन चरकारी रास्ता हँल आरु सेइ रास्ताइदि बाछ आरु मटर गाड़ीओ चलिबलै आरम्भ करिले। लगे लगे बाहिरर परा अजस्र मानुह आहि मँहघूलि भरि परिल आरु सि एखन सरु-सुरा चहरत परिणत हँल।
>
> (बरगोहाञि 2014:173)

(भावार्थ : पिछले कुछ सालों पहले मँहघूलि और शहर के बीच एक नया सरकारी रास्ता बना और उस रास्ते पर बस और अन्य गाड़ियों चलने लगीं। फिर तो बाहर से असंख्य लोग महँघूलि में आने लगे और मँहघूलि एक छोटा-मोटा शहर बन गया।)

पहले महँघूलि के किसी परिवार को कोई असामाजिक या समाज-विरुद्ध काम करने पर बिरादरी बाहर या समाजच्युत कर दिया जाता था। पर अब महँघूलि में किसी को बिरादरी बाहर नहीं किया जाता। क्योंकि अब समाज-व्यवस्था

को सही रखने के लिए यह उपाय कारगर नहीं है। इसके पीछे का कारण यह है कि अब बिरादरी बाहर किए गए लोगों को एक अलग बिरादरी मिल जाती है - जो बाहर से आकर बस गई है और जिसमें कोई ऐसा नियम नहीं है।

शिवनाथ और उनके परिवार को अपने परिवार का प्रभुत्व खो जाने का प्रमाण तब मिलता है जब गाँव के वैशाख महीने में मनाए जाने वाले *बहाग बिहु* उत्सव के *हुँचरि* (एक प्रकार का नृत्य-गान) का आरम्भ - जो सदा से उनके आँगन में ही सबसे पहले होता था - उनके आँगन में न होकर गाँव के किसी दूसरे आँगन में हुआ। गाँव वालों का ऐसा करने के पीछे कारण था कि स्वतंत्रता के बाद गाँव वाले अब सभी को बराबर मानते हैं और बिहु के *हुँचरि* का आरम्भ गाँव के एक छोर से करना सुविधाजनक था। शिवनाथ इस बात को पचा नहीं पाए और फैसला लिया कि उनके परिवार का कोई भी इस *हुँचरि* दल का स्वागत नहीं करेगा बल्कि घर के नौकर से स्वागत कराया जायेगा। *हुँचरि* दल जब उनके आँगन में आयी तब शिवनाथ और उनके परिवार का कोई बाहर नहीं निकला। घर के नौकर नकुल ने ही दल का स्वागत किया। दल ने *हुँचरि* समाप्त कर दिया पर घर का कोई बाहर नहीं निकला, तो उस दल के युवा सदस्य इस बात को सह नहीं पाये। उन्होंने अपमानित महसूस किया। *हुँचरि* दल के एक युवा सदस्य ने घोषणा की -

> एऑँलोकक आजिरे परा एघरीया करा हॅल
> बुलि राइजे इयातेइ कै याओक।
>
> (बरगोहाञि 2014:90)

(भावार्थ : यह आप सब घोषणा कर दें कि इन लोगों को आज से ही बिरादरी बाहर किया जाता है।)

उनलोगों ने धमकी दी कि अगले दिन गाँव के नामघर में इस पर विचार-विमर्श करके सजा के तौर पर शिवनाथ के परिवार को बिरादरी बाहर कर दिया जायेगा और जब सचमुच शिवनाथ के परिवार को बिरादरी बाहर कर दिया गया तब शिवनाथ को समझ में आया कि समाज का शक्ति-केंद्र स्थानांतरित हो गया है। घरवालों के कहने पर शिवनाथ को गाँववालों से अपने परिवार के आचरण के लिए माफी माँगनी पड़ी।

2.4. परंपरागत आभिजात्य के प्रदर्शन की प्रवृत्ति:

'पिता-पुत्र' उपन्यास में पुरानी पीढ़ी के परंपरागत आभिजात्य के प्रदर्शन की प्रवृत्ति का भी चित्रण मिलता है। उपन्यास में अपनी बड़ी बेटी रम्भा को लेकर शिवनाथ को बहुत चिंता है। इसका कारण है पाँच साल की उम्र में चेचक निकलने के कारण चेहरे पर दाग आ जाने के साथ ही उसकी एक आँख भी खराब हो चुकी है। शिवनाथ अपनी जात और हैसियत की कई जगह रम्भा की शादी की बात चलाते हैं, पर कोई भी उनकी बेटी से शादी करने को तैयार नहीं होता। तभी लालुवा बूढ़ा का बेटा कनक प्रस्ताव भेजता है कि वह रम्भा से विवाह करना चाहता है।

कनक आजकल बड़ा ठेकेदार बन गया है। उसके घर जाकर उनकी बेटी सुखी ही रहेगी। पर बात यहाँ यह है कि लालुवा बूढ़ा एक वक्त शिवनाथ के घर में ही नौकर था। अब लालुवा बूढ़ा और उसका बेटा कनक पैसा कमा लेने के बाद शिवनाथ के घर से रिश्ता जोड़कर समाज में इज्जत हथियाने के चक्कर में हैं। साथ ही लालुवा बूढ़ा शिवनाथ का समधी बनकर उनकी बराबरी करना चाहता है। शिवनाथ यह कभी नहीं होने दे सकते। शिवनाथ अपनी पत्नी से कहते हैं -

> मोर छोवाली बिया करि सि जातत उठिबलै मन करिछे। धनर अहंकारत लालुवा बुढायो बिचारे- यिखन घरत सि एदिन गोलाम आछिल, यार ठाइ आछिल माटित, एतिया मोर समाने तार ठाइ हओक चकीत। सेइटो मइ केतियाओ हॅबलै निदिछोँ।
>
> (बरगोहाञि 2014:167)

(भावार्थ: मेरी लड़की से विवाह करके वह ऊँचा उठना चाहता है। धन के अहंकार में लालुवा बुढ़ा चाहता है- जिस घर में वह एक दिन नौकर था; जिसकी जगह थी जमीन पर, अब मेरे बराबर उसकी जगह हो कुर्सी पर। यह मैं कभी होने नहीं दूँगा ।)

यहाँ शिवनाथ का जिद्दी स्वभाव और अपने सम्मान की रक्षा का दुराग्रह दीखता है। उनकी इसी हठ के कारण उनकी कानी बेटी रम्भा उम्र भर अविवाहित ही रह जाती है। क्योंकि शिवनाथ अपने अहं को या 'ईगो' को छोटा होने नहीं दे सकते ।

महॅघूलि क्षेत्र में अधिकतरों के पास उतनी भी जमीन नहीं कि वे साल भर खाने के लिए अनाज उगा पाएँ। शिवनाथ हर वर्ष बहुत-से ऐसे लोगों को अपनी जमीन खेती के लिए देते हैं। वे खुद खेती नहीं करते। शिवनाथ को परोपजीवी कहा जा सकता है जो दूसरों की मेहनत पर पलते हैं। जब गाँव की नदी पर तटबंध बन जाता है तब बहुत-सी नई जमीन गाँववालों को मिलती है जिसमें वे खेती कर सकते हैं। उस साल शिवनाथ की जमीन बँटाई पर कोई नहीं लेता। शिवनाथ इस बात से बहुत चिंतित हो जाते हैं। उनके घर-परिवार का खर्चा कैसे चलेगा इस बात की चिंता उनको सताने लगती है --

> खेती बंध हॅबलै हॅले बा आनकि तार परिमाणो ह्रास पाबलै हॅले लॅरा दुटाक पढ़ार खरच केनेकै योगाब- सेइ कथा चिंता करि जीवनत प्रथम बारर कारणे शिवनाथर हृतकम्प हॅबर उपक्रम हॅल।
>
> (बरगोहाञि 2014:132)

(भावार्थ: खेती न होने पर या कम परिमाण में होने पर दोनों लड़कों की पढ़ाई का खर्च कैसे निकालेंगे- यह बात सोचकर जीवन में पहली बार शिवनाथ का दिल जोरो से धड़कने लगा ।)

पर जब तटबंध के टूट जाने पर बाढ़ के पानी से गाँववालों की नई जमीन की खेती खराब हो जाती है और वे अपनी भूल समझ जाते हैं, तब शिवनाथ को संतोष होता है कि फिर से गाँववाले उनकी जमीन बँटाई पर लेंगे ।

2.5. बाढ़ की समस्या :

बाढ़ की समस्या असम की दशकों पुरानी समस्या है। ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियों पर तटबंध बनाना और उन तटबंधों का टूटकर असम के विस्तृत क्षेत्र को बाढ़ के पानी में डुबो देना साल-दर-साल होता आ रहा है। भारी बरसात इस आपदा के लिए जितना जिम्मेदार है, तटबंध-निर्माण में लगे अधिकारियों और ठेकेदारों का भ्रष्टाचार भी उतना ही जिम्मेदार है। असमीया के दर्जनों उपन्यासों में इस भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हुआ है। आज भी यह भ्रष्टाचार कम नहीं हुआ है। अलग-अलग दलों की सरकारें आती रहीं जाती रहीं, पर अधिकारी और ठेकेदारों के इस कुकृत्य को कोई रोक नहीं पाया। बल्कि उनके साथ सत्ताधारियों ने भी साँठ-गाँठ की है और पैसा कमाया है। इन मुट्ठी भर लोगों के स्वार्थ के लिए असम के लाखों लोगों को हर बरसात में जिस नारकीय स्थिति में रहना और जीना पड़ता है उसका हरजाना कोई नहीं भरता। बात यहाँ पर ही समाप्त नहीं हो जाती। बाढ़ रिलिफ के तौर पर जो अनाज सरकार की ओर से बाढ़ पीड़ित जनता को भेजा जाता है, उसको भी सत्ताधारी वर्ग बहुत ही अन्यायपूर्ण तरीकों से हजम कर जाता है। यह मानवीयता की घोर अवमानना है। 'पिता-पुत्र' उपन्यास में भी रेब महाजन और केशव मण्डल अपने लोगों में ही मिल-बाँटकर रिलिफ का सारा अनाज खा जाते हैं। बाढ़ पीड़ित आम जनता खाली थैला लेकर ही वापस लौट आती है। बाढ़ के रिलिफ के लिए आए चावल कैसे बंदर-बाँट करके अपने लोगों को सत्ताधारी दे देते हैं, इसका वर्णन शिवनाथ से कहे फटिक नामक पात्र के इन शब्दों में हुआ है -

> योवा पंचायतर इलेक्चनत यिबोर मानुहे रेब महाजन आरु केशव मण्डलर दलर फाले भोट दिछिल, सेइबोर मानुहेइ चाउल पाइछे, बाकीबोरे नाइपोवा। आजिहे बुजिलो देउता, दुखीयार प्राण रक्षार कारणे रिलिफर चाउल नहय, सि आचलते भोट दियार पुरस्कारहे।
>
> (बरगोहाञि 2014:117)

(भावार्थ: पिछले पंचायत के चुनाव में जिन लोगों ने रेब महाजन और केशव मण्डल के दल को वोट दिया था, उन लोगों को ही चावल मिला है, बाकी को नहीं मिला। आज समझा बाबूजी, गरीब की प्राण रक्षा के लिए रिलिफ का चावल नहीं है, वह तो असल में वोट देने का पुरस्कार है ।)

2.6 आदर्श चरित्रों का संघर्ष :

आलोच्य उपन्यास में कालिनाथ के द्वारा आदर्श चरित्रों के संघर्ष की कथा कही गयी है। आम आदमी के लिए सुविधाभोगी लोगों से लड़ने का कोई सम्बल नहीं होता। शक्ति, सत्ता, न्याय कुछ भी तो उनके पक्ष में नहीं होते। कालिनाथ को उसकी बहन रम्भा अपने छोटे भाई लक्ष्मीनाथ के अत्याचारों की बात लिख भेजती है। वह यह भी लिखती है कि लक्ष्मीनाथ का अत्याचार अगर इसी प्रकार जारी रहे तो पिता और माता ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रहेंगे। कालिनाथ अपनी एम.ए. की पढ़ाई अधूरी छोड़कर गुवाहाटी से महँघूलि अपने पिता का सहारा बनने के लिए वापस आ जाता है। कालिनाथ को अपने भाई को सही रास्ते पर लाने का एक उपाय सूझता है कि महँघूलि में शराब और अफीम के गोरखधंधे का मूलोच्छेद किया जाए। कालिनाथ इस संबंध में दिवाकर से कहता है -

> किंतु मइ हिचाप करि देखिछौं, गोटेइ मँहघूलिर पराइ चोराङ मदर ब्यवसाय उच्छेद करिब नोवारिले केवल मोर भाइ लक्ष्मीनाथक मद खोवार परा बिरत राखिबलै मोर साध्य नाइ।
>
> (बरगोहाञि 2014:221)

(भावार्थ: पर मैंने विचार करके पाया है, पूरे मँहघूलि से अवैध शराब का व्यापार खत्म न करने पर केवल मेरे भाई लक्ष्मीनाथ को शराब पीने से रोक पाना मेरे वश में नहीं।)

कालिनाथ बचपन से ही स्वभाव से अंतर्मुखी और एकांत प्रिय रहा है। इस प्रकार के उद्देश्य की पूर्ति के लिए समाज में अबाध गति और लोगों से मिलने-जुलने की आवश्यकता होती है। कालिनाथ अपने गाँव के बारे में भी ज्यादा कुछ नहीं जानता। क्योंकि उनके पिता शिवनाथ ने अपने आभिजात्य की रक्षा के लिए अपने बच्चों को गाँववालों से घुलने-मिलने नहीं दिया। इस सम्बंध में उपन्यासकार टिप्पणी करते हैं -

> गाँवर लँरा हैयो कालिनाथे गाँवर कथा प्राय एकोकेइ नाजाने, कारण शिवनाथे निजर बंश मर्यदार भेमत निजर लँरा-छोवालीबोरक गाँवर मानुहर लगत बरकै मिला-मिछा करिबलै निदिछिल।
>
> (बरगोहाञि 2014:208)

(भावार्थ: गाँव का लड़का होकर भी कालिनाथ गाँव के बारे में प्राय: कुछ भी नहीं जानता, क्योंकि शिवनाथ ने अपने वंश गौरव के अहंकार में अपने बच्चों को गाँव के लोगों के साथ ज्यादा घुलने-मिलने नहीं दिया था ।)

कालिनाथ को अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो गाँव से अच्छी तरह परिचित हो और साथ ही वह सज्जन और ईमानदार हो। कालिनाथ को अपने बचपन के स्कूल के साथी दिवाकर की याद आती

है, जो पढ़ने में बहुत अच्छा होने के बावजूद गरीबी के कारण स्कूल की पढ़ाई पूरा री नहीं कर पाया था। कालिनाथ दिवाकर के साथ मिलकर महँघूलि से शराब और अफीम के गोरख-धंधे को समाप्त करने का प्रयास करता है। इस प्रयास में वह बहुत हद तक सफल भी होता है। दिवाकर अब भी उतना ही गरीब है जितना वह बचपन में था। अपनी गृहस्थी के आवश्यक कार्यों को दिन में पूरा कर रात के वक्त वह कालिनाथ की सहायता कर पाता है ।

अवैध शराब की कालाबाजारी को रोकने के काम में नियुक्त आबकारी अधिकारी सुरेन महंत ही महँघूलि में अवैध शराब बनाने, बेचने के व्यापार को प्रोत्साहन दे रहा था। वह पाँच साल से महँघूलि में ही आबकारी अधिकारी के तौर पर है। उसके वहाँ रहते महँघूलि से शराब के व्यापार को खत्म नहीं किया जा सकता। इस अधिकारी का तबादला कराने के लिए कालिनाथ शिलांग में मंत्री से मिलने जाता है। पर मंत्री को पहले ही महँघूलि क्षेत्र का विधायक विश्व हाजरिका सुरेन महंत का तबादला न करने के लिए अनुरोध कर चुका होता है। महँघूलि का जन प्रतिनिधि यही विधायक है। महँघूलि के भले-बुरे के संदर्भ में मंत्री विधायक की बात को ही ज्यादा महत्त्व देगा। कालिनाथ असफल लौटता है। सुरेन महंत ने विश्व हाजरिका को चुनाव के समय पैसे देकर चुनाव जीतने में सहायता की थी। सुरेन महंत का तबादला रोककर विश्व हाजरिका उसका मूल्य चुकाता है। राजनीति परस्पर सहायता के द्वारा लाभ उठाने और सुविधा भोगने का पर्याय बन गयी है। भारत की राजनीति के इस पक्ष को स्पष्ट करते हुए कालिनाथ कहता है -

> भारतत राजनीति करिबलै बेछिभाग मानुहेइ एको एकोजनी कामधेनु गाइ पुहिब लगा हय। दलबोरेओ एने कामधेनु गाइ पोहे, ब्यक्तिगत राजनीतिकसकलेओ पोहे। आमार बिश्व हाजरिकार कामधेनु गाइ हॅल एइ आबकारी कर्मचारीकेइजन।
>
> (बरगोहाञि 2014:307)

(भावार्थ: भारत में राजनीति करने के लिए अधिकतर लोगों को ही एक एक कामधेनु गाय पालना पड़ता है। प्रत्येक दल ऐसी कामधेनु गाय पालता है, व्यक्तिगत तौर पर राजनीतिज्ञ भी पालते हैं। ये आवकारी कर्मचारीगण हमारे विश्व हाजरिका की कामधेनु गायें हैं।)

2.7. नायक और खलनायक का प्रश्न :

'पिता-पुत्र' उपन्यास का नायक कौन है अगर इस प्रश्न का उत्तर पाना चाहें तो हमें कहना होगा कि पुरानी पीढ़ी के शिवनाथ और नई पीढ़ी के कालिनाथ इस आसन के प्रबल दावेदार हैं। शिवनाथ को भी उतना ही महत्त्व और स्थान दिया गया है जितना कालिनाथ को। उपन्यास के प्रारम्भिक पन्नों में शिवनाथ को ही हम प्रमुख पात्र या यों कहे नायक के रूप में चित्रित होते हुए

पाते हैं, वहीं उपन्यास के अंतिम पन्नों में कालिनाथ को। बीच के पन्नों में शिवनाथ और कालिनाथ दोनों समान रूप से महत्त्व अर्जित करने में सफल हुए हैं। जिस प्रकार इस उपन्यास का नाम है 'पिता-पुत्र' उसी प्रकार इस उपन्यास के नायक हैं 'शिवनाथ-कालिनाथ', पिता शिवनाथ और पुत्र कालिनाथ।

जिस प्रकार हमने 'पिता-पुत्र' उपन्यास के नायक पर विचार किया उसी प्रकार इसके खलनायक पर भी विचार कर लेना उपयुक्त होगा। इस उपन्यास के खलनायक के रूप में जिन दो लोगों के नाम लिए जा सकते हैं, वे हैं – रेब महाजन और केशव मण्डल। रेब महाजन और केशव मण्डल के इर्द-गिर्द सारे खल तत्त्व चक्कर काटते हैं। महँघूलि में होनेवाले हर अन्याय और भ्रष्टाचार के पीछे रेब महाजन और केशव मण्डल हैं। रेब महाजन वास्तव में महँघूलि का नहीं है, वह शहर का आदमी है। युद्ध के समय होलसेलर बनकर वह महँघूलि आया था। फिर वह वापस नहीं गया, महँघूलि में ही बस गया। चीनी, नमक और मिट्टी के तेल की कालाबाजारी करके उसने लाखों रुपये कमाए। फिर वह अफीम का धंधा भी करने लगा। वह अंग्रेज-भक्त और कांग्रेस स्वयंसेवकों का घोर शत्रु था। रेब महाजन के संदर्भ में उपन्यासकार ने कहा है -

> रामेश्वरहँतर चकुत रेब महाजनेइ लाहे लाहे है परिछिल अन्याय, अत्याचार आरु शोषणर प्रतीक।
>
> (बरगोहाञि 2014:16)

(भावार्थ: रामेश्वर लोगों की दृष्टि में रेब महाजन धीरे-धीरे बन गया था अन्याय,अत्याचार और शोषण का प्रतीक।)

उपन्यासकार की उपर्युक्त टिप्पणी से रेब महाजन के खलनायकत्व का प्रमाण मिलता है।

केशव मण्डल दूसरा खलनायक है। वह जब मण्डल अर्थात पटवारी था तब उसका अन्याय चरम सीमा तक पहुँच गया था। वह अपने पद का गलत फायदा उठाता था और घूस लेकर किसी की जमीन किसी और की सीमा के अंदर कर देता था। उपन्यास में बकुली नामक एक विधवा की जमीन उसके पड़ोसी नराम को घूस लेकर दे देने और फिर घूसखोरी की हद पार कर के विधवा बकुली से भी घूस लेने और घूस लेकर भी उसको ठगने का प्रसंग आता है। यही केशव मण्डल सन् 1942 ई॰ के आंदोलन के समय अपने स्वभाव और ख्याति के प्रतिकूल आंदोलन में भाग लेकर जेल चला जाता है। परंतु अपने स्वभाव और ख्याति के अनुकूल स्वतंत्रता के बाद अपने त्याग का मूल्य पाने के लिए रेब महाजन के साथ मिलकर अन्याय और अत्याचार का एक नया अध्याय लिखता है। केशव मण्डल ने नराम से एक गाय घूस के तौर पर ली थी। बकुली जब उस गाय

को केशव मण्डल के आँगन में देखती है तब सोचती है-

> मइ इमानदिने मण्डलक केइसेरमान गाखीर aदियेइ भाबि आछौं ये मोर काम है आछे; इफाले ये नरामे गाखीरर भँरालटोके आनि मण्डलर घरत बहुवाइ दिछेहि मोर सेइटो खबरेइ नाइ। नरामक मइ केनेकै बले पारिम?
>
> (बरगोहाञि 2014:23-24)

(भावार्थ: मैं इतने दिनों तक मण्डल को कुछ सेर दूध देकर ही सोच रही थी कि मेरा काम हो रहा है, इस तरफ तो नराम ने दूध का भण्डार ही लाकर मण्डल के घर रख दिया है मुझे तो इसकी खबर ही नहीं थी। नराम के साथ में किस बूते लड़ूँगी।)

2.8. प्रेम-प्रसंगों का वर्णन :

प्रेम के बिना जीवन पूर्ण नहीं हो सकता। फिर जीवन का प्रतिफलन करने वाले उपन्यास साहित्य में प्रेम-प्रसंग न आए यह तो सम्भव नहीं। 'पिता-पुत्र' भी इसका अपवाद नहीं है। 'पिता-पुत्र' में प्रेम के तीन प्रसंग विशेष रूप से ध्यान देने योग्य हैं। पहला प्रेम-प्रसंग है शिवनाथ का। एक बार शिवनाथ अपनी किशोर उम्र की बात सोचने लगते हैं। उस समय उनके घर में काम करने वाले गोपाल के माध्यम से शिवनाथ का प्रेम-प्रसंगों से परिचय होता है। गोपाल शिवनाथ को अतिरंजित करके झूठे-सच्चे कई-कई किस्से सुनाता है, जिनमें गोपाल सभी युवतियों का प्रेमी और उनके प्रणय का साथी होता है। गोपाल रात्रि बिहु का जो उद्दाम वर्णन करता रहता है, उससे शिवनाथ का प्रस्फुटित हो रहा यौवन अत्यधिक उत्तेजित होता है और वह भी रात्रि बिहु में जाने के लिए व्याकुल होता है। गोपाल जानता है कि शिवनाथ के पिता को पता चल जायेगा तो उन दोनों की बुरी गति होगी। परंतु शिवनाथ के अत्यधिक आग्रह पर योजनापूर्ण तरीके से वे लोग बिना किसी को पता लगे रात्रि बिहु में जाते हैं। शिवनाथ को गोपाल की अतिरंजनापूर्ण किस्सों जैसी कोई गतिविधि तो नहीं दिखाई देती, पर युवक-युवतियों के यौवनपुष्ट शरीरों की थिरकन और उनके गीत शिवनाथ का मन मोह लेते हैं। शिवनाथ को उन्हीं युवतियों में से एक युवती बहुत आकर्षित करती है। वे सोचते हैं कि अगर भविष्य में प्रेम करके अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता उन्हें मिलती तो वे इसी युवती को चुनते। पर वे जानते हैं कि ऐसी स्वतंत्रता उनके पास कभी नहीं होगी। उपन्यासकार टिप्पणी करते हैं कि यह 'प्रथम दर्शन में ही प्रेम' है। पर शिवनाथ जानते हैं कि अपना प्रेम निवेदन करने के लिए इस युवती से दूसरी बार मिलने की सम्भावना निश्चित रूप से नहीं है -

> प्रथम दर्शनतेइ प्रेम! किंतु हाय, शिवनाथे प्रथम दर्शनतेइ छोवालीजनीर प्रति प्रेम

> अनुभव करिलेओ ताइक सेइ प्रेम निबेदन करिबलै द्वितीयबार ताइर लगत दर्शन होवार कोनो आशाइ निश्चय नाइ।
>
> (बरगोहाञि 2014:73)

(भावार्थ: प्रथम दर्शन में ही प्रेम। किंतु हाय, शिवनाथ प्रथम दर्शन में ही उस लड़की के प्रति प्रेम अनुभव करने पर भी उसे वह प्रेम निवेदन करने के लिए दूसरी बार उसके दर्शन की कोई आशा निश्चित रूप से नहीं है।)

दूसरा प्रेम-प्रसंग शिवनाथ के ज्येष्ठ पुत्र गौरीनाथ का है। छुट्टी में कॉलेज से घर आने पर एक दिन रम्भा को गौरीनाथ के सूटकेस में एक प्रेमपत्र मिलता है। शिवनाथ की पत्नी वह प्रेमपत्र शिवनाथ को दे देती है। शिवनाथ वह प्रेमपत्र पढ़ जाते हैं। शिवनाथ को बहुत आघात लगता है और साथ ही वे बहुत क्रोधित भी होते हैं। गौरीनाथ घर आकर अपने सूटकेस में अपना प्रेमपत्र न पाकर हंगामा खड़ा कर देता है। उसके मुताबिक उसके सूटकेस में से उसके कुछ जरूरी कागज गायब है। वह रम्भा को ही इसके पीछे का कारण मानकर उसे कानी आदि कहकर गालियाँ देता है। शिवनाथ गौरीनाथ को कठोरता से कहते हैं कि भविष्य में वह कभी रम्भा को इस प्रकार कानी न कहे। शिवनाथ गौरीनाथ को वह प्रेमपत्र जला देने और भविष्य में ऐसा काम अर्थात् प्रेम आदि न करने की प्रतिज्ञा करने का आदेश देते हैं। गौरीनाथ ऐसा करने से इनकार कर देता है। शिवनाथ समझ जाते हैं कि उनका पुत्र उनकी बात नहीं मानेगा। अत: गौरीनाथ से वे अपने सभी संबंध तोड़ने के लिए बाध्य होंगे। शिवनाथ के मन में प्रेम को लेकर क्या धारणा है इसे बताते हुए उपन्यासकार ने लिखा है -

> तेओँर मनत दृढ़ बिश्वास ये प्रेम नाटक-नभेलरहे बस्तु, बास्तव जीवनत तार कोनो स्थान नाइ। चरित्रहीन लम्पटर बाहिरे आन कोनोओ प्रेम करि बिया करिब नोवारे आरु तेनेकै होवा बियार परिणामो केतियाओ सुखकर हॅब नोबारे।
>
> (बरगोहाञि 2014:144)

(भावार्थ: उनके मन में दृढ़ विश्वास है कि प्रेम नाटक-नॉवेल वगैरह की ही वस्तु है, वास्तव जीवन में उसका कोई स्थान नहीं है। चरित्रहीन लम्पट के अलावा और कोई भी प्रेम करके विवाह नहीं कर सकता और उस तरह होने वाले विवाह का परिणाम कभी सुखमय नहीं हो सकता।)

गौरीनाथ गर्मियों की छुट्टी के बाद गुवाहाटी लौट जाता है और दो सप्ताह बाद शिवनाथ को पुत्र की एक चिट्ठी मिलती है। उसमें गौरीनाथ साफ कह देता है कि वह अपनी प्रेमिका से ही विवाह करेगा। त्याज्यपुत्र होने की धमकी से वह नहीं डरता है। गौरीनाथ यह भी कहता है कि उसकी प्रेमिका ऊर्मिला एक कैवर्त जाति की लड़की है, जिसे समाज नीच जाति मानता है। गौरीनाथ कहता है कि वह यह भी जानता है कि

शिवनाथ अपने संस्कारों के और समाज की मान्यताओं के विरुद्ध जाकर कभी एक कैवर्त जाति की युवती को पुत्रवधु के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। गौरीनाथ तथाकथित नीच जातियों के संबंध में समाज और राजनीति के बड़े-बड़े लोगों की मानसिकता को उजागर करते हुए कहता है -

> मइ समाजर बहुतो भव्य-गव्य नेताके देखिछोँ- यिसकले जातिभेद प्रथा मुखेरे नामानो बुलि कय, सभाइ-समितिये जाति-भेद प्रथा आरु अस्पृशयतार बिरुद्धे डाङर-डाङर बक्तृता दिये, किंतु कामर बेलिका कैवर्त-नम:शूद्र आदि तथाकथित नीच सम्प्रदायर लगत बैबाहिक सम्पर्क स्थापनर कथा सपोनतो चिंता करिब नोवारे।
>
> (बरगोहाञि 2014:147)

(भावार्थ: मैंने समाज के बहुत से भव्य-गव्य नेताओं को देखा है- जो लोग जातिभेद प्रथा को मुँह से तो अस्वीकार करते हैं, सभा-समितियों में जाति-भेद प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, किंतु काम के समय कैवर्त-नम:शुद्र आदि तथाकथित नीचे सम्प्रदायों के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित करने की बात सपने में भी सोच नहीं सकते।)

तीसरा प्रेम-प्रसंग है शिवनाथ के मझले पुत्र कालिनाथ का। कालिनाथ के अपने लक्ष्य की पूर्ति में सहायता प्राप्त करने के लिए दिवाकर के पास जाने पर वहाँ उसे दिवाकर की बहन बहागी से उसका परिचय होता है और कालिनाथ बहागी से प्रेम करने लगता है। बहागी और कालिनाथ का प्रेम-संबंध की चर्चा लोगों की जुबान पर चढ़ जाता है। जब शिवनाथ को अपने पुत्र के सम्बंध में यह सब पता चलता है तो वे कालिनाथ से कहते हैं कि बहागी एक चरित्रहीना लड़की है। इसीलिए कालिनाथ और कभी दिवाकर के घर न जाए। शिवनाथ कालिनाथ को बताते हैं कि बहागी ने स्कूल में शिक्षिका की नौकरी पाने के लिए एक सब-इंस्पेक्टर के साथ अनुचित रिश्ता बनाया था। कालिनाथ इस घटना की सच्चाई जानने के लिए दिवाकर के घर जाता है। अकेले में वह बहागी से इस घटना के बारे में पूछता है। बहागी बताती है कि कैसे सब-इंस्पेक्टर ने उस पर जोर-जबरदस्ती करने का प्रयास किया था और वह कैसे वहाँ से भाग आयी थी। कालिनाथ अपने मन की बात इस प्रकार बताता है–

> बहागी, मइ तोमाक भालपाओँ, मइ तोमाक बिया करिब खोजोँ।
>
> (बरगोहाञि 2014:251)

(भावार्थ: बहागी मैं तुमसे प्यार करता हूँ, मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ ।)

पर शिवनाथ के आमरण अनशन के कारण कालिनाथ विवश हो जाता है। बहागी से विवाह का इरादा त्याग देता है। इन तीनों प्रेम-प्रसंगों से हमें यह ज्ञात होता है कि प्रेम के संबंध में शिवनाथ, गौरीनाथ और कालिनाथ में से गौरीनाथ सबसे ज्यादा साहसी है। वह अपने प्रेम को सफल परिणति देता है। शिवनाथ तो अपने प्रेम को सफल बनाने के लिए प्रयास करने की सोचता भी नहीं। वहीं कालिनाथ को अपने प्रेम से अपने पिता का जीवन अधिक प्रिय है। कालिनाथ सफल पुत्र तो बन जाता है, पर असफल प्रेमी। पर गौरीनाथ असफल पुत्र बनकर भी सफल प्रेमी बनता है।

2.9. जातिगत भेदभाव का चित्रण :

इस उपन्यास में जातिगत ऊँच-नीच की समस्या चित्रित हुई है। शिवनाथ के गाँव के पास ही कैवर्त गाँव है। कैवर्त लोगों को नीच जाति का माना जाता है। उनको छूना भी ऊँची जातवाले पाप मानते हैं। जब कैवर्त गाँव का कतीया शिवनाथ के साथ बात कर रहा होता है तो वह ताम्बूल खिलाने का अनुरोध करता है। शिवनाथ की छोटी बेटी एक ताम्बूल लाकर दूर से ही कतीया की तरफ फेंक देती है। शिवनाथ की बेटी के इस आचरण के पीछे उसका शिशुसुलभ नासमझी भरी अशिष्टता नहीं बल्कि नीच जाति के व्यक्ति को स्पर्श न करने की चेतना काम कर रही होती है।

कैवर्त लोगों के साथ अस्पृश्यता का आचरण करने की कई घटनाएँ उपन्यासकार ने चित्रित की हैं। एक बार एक कैवर्त गाँव के लड़के के सूखने के लिए धूप में रखे सिझाये धान के पास खड़े होने पर शिवनाथ की माँ ने वह सारा धान फेंक दिया था और उस लड़के को बहुत गालियाँ दी थीं।

एक और घटना का उल्लेख करते हुए उपन्यासकार ने कहा है कि एक बार शिवनाथ के कक्षा में अव्वल आने पर पिता ने स्कूल के सभी शिक्षकों को नाश्ते पर बुलाया था। सभी शिक्षक बाहर बैठकर बातें कर रहे थे। उनमें एक कैवर्त जाति का शिक्षक भी था। कुछ देर बाद पिता ने सभी शिक्षकों को भीतर बुलाया। जब कैवर्त शिक्षक भी भीतर घुसने लगे तो शिवनाथ के पिता ने उन्हें अंदर घुसने से रोक दिया। वह शिक्षक बाहर ही बैठे रहे। नाश्ता लेकर जब शिवनाथ बाहर आए तो उन्होंने देखा – वह शिक्षक जेब से एक रूमाल निकालकर जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ रहे हैं-

> शिक्षकजने जेपर परा रुमाल एखन उलियाइ लरालरिकै चकुपानी मचिछे।
>
> (बरगोहाञि 2014:58)

(भावार्थ: वह शिक्षक जेब से एक रूमाल निकाल कर जल्दी-जल्दी आँसू पोंछ रहे हैं।)

एक बार एक ब्राह्मण लड़के को एक कैवर्त लड़के के थप्पड़ मार देने पर उस ब्राह्मण लड़के ने आत्महत्या कर ली थी। उसने आत्महत्या की चिट्ठी में लिखा था –

> डोमर चर खोवार पाछत प्राण धारण करि थका असम्भव।
>
> (बरगोहाञि 2014:58)

(भावार्थ: डोम का थप्पड़ खाने के बाद जिंदा रहना असम्भव है ।)

परंतु स्थिति में परिवर्तन आ रहा है। अब कुछ वर्षों के अंदर महॅघूलि ही में चार असवर्ण विवाह हुए हैं। उपन्यासकार ने शिवनाथ की मनःस्थिति की व्याख्या करते हुए लिखा है -

> गौरीनाथर कथाइ बोधहय सँचा, मथाउरि भङा लुइतर बानपानीर दरे समाजलै नतुन युगर प्लावन आहिब धरिछे। नहॅले यिखन समाजर भयत तेओँ प्राणाधिक बरपुत्र गौरीनाथक त्याज्य पुत्र करिछिल, हरकांतइ अजातिर छोवाली बिया करोवार कारणे मात्र केइबछरमानर आगते यिखन समाजत भूमिकम्पर सृष्टि हैछिल, सेइखन समाजतेइ आजि केइबछरमानर भितरते एने बिराट परिबर्तन हॅब धरिछे ये केवल मॅहघूलि गाँवते योवा केइबछरत चारिखनलै असबर्ण बिया होवा सत्त्वेओ मानुहे सेइ कथा मानि लॅबलै आरम्भ करिछे।
>
> (बरगोहाञि 2014:296)

(भावार्थ: गौरीनाथ की बात ही सम्भवत: सही है, तटबंध तोड़ने वाले ब्रह्मपुत्र की बाढ़ की तरह समाज में नये युग का प्लावन आने लगा है। वरना जिस समाज के डर से उन्होंने प्राण से प्रिय ज्येष्ठ पुत्र गौरीनाथ को त्याज्य पुत्र किया था, हरकांत के अजाति की लड़की से विवाह करने के कारण मात्र कुछ वर्ष पहले जिस समाज में भूकम्प की सृष्टि हुई थी, उसी समाज में आज कुछ वर्ष के भीतर ही ऐसा विराट परिवर्तन आरम्भ हुआ है कि केवल मॅहघूलि गाँव में ही पिछले कुछ वर्षों में ही चार असवर्ण विवाह होने के बावजूद लोगों ने यह बात आसानी से स्वीकार करना आरम्भ किया है ।)

महॅघूलि में ऐसी स्थिति बनने के पीछे का कारण है – अब महॅघूलि में बाहर से सैकड़ों लोग आकर बस गए हैं और अब महॅघूलि में विभिन्न लोगों के मेल से एक मिश्रित समाज की सृष्टि हुई है। जो लोग समाजच्युत हो जाते हैं, वे इस नए समाज में स्थान पाते हैं। इसी कारण बिरादरी बाहर या समाजच्युत होने पर भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। इसके साथ ही जमीन के अनुपात में लोगों की संख्या में वृद्धि के कारण अब खेती पर निर्भर न करके लोग दुकानदार, ठेकेदार, दर्जी आदि की वृत्ति लेने लगे हैं। उसके कारण जमीन के उत्तराधिकार से वंचित कर देने का डर दिखा कर

परम्परा का पालन कराने में बड़े-बुजुर्ग सफल नहीं हो पाते हैं।

महँघूलि होमेन बरगोहाञि के कई उपन्यासों का केंद्र है। महँघूलि के पास का कैवर्त गाँव उनके उन उपन्यासों में प्रकारांतर से आया है और कैवर्त लोगों के जातिगत रूप से हीन होने की मान्यता के कारण उन लोगों के साथ किए गए अस्पृश्यता का व्यवहार भी चित्रित हुआ है। होमेन बरगोहाञि के 'मत्स्यगंधा' नामक लघु उपन्यास में एक कैवर्त युवती से प्रणय संबंध स्थापित करनेवाले युवक को कैवर्त जाति की युवती से विवाह करने पर मजबूर कर के युवती की भाभी ऊँची जाति से सदियों से प्राप्त अपमान का बदला ले लेती है।

2.10. समाज के बदलाव के तत्वों का चित्रण :

'पिता-पुत्र' उपन्यास में समाज में परिवर्तन लानेवाली क्रियाओं की यथार्थ छवि मिलती है।कालिनाथ शिलांग से गुवाहाटी पहुँचता है। वहाँ वह सौमित्र मुखर्जी नामक अपने कम्युनिष्ठ मित्र के घर ठहरता है। जब वह सौमित्र के घर पहुँचता है तब सौमित्र घर में नहीं होता। सौमित्र के माँ-बाप अपने बेटे के पथभ्रष्ट होकर शराबी बन जाने और विप्लव का सपना देखने की बात कहते हैं। वे कालिनाथ को अपने पुत्र को समझाने का दायित्व सौंपते हैं।

सौमित्र और कालिनाथ के बीच विप्लव की प्रकृति को लेकर बहस चलती है। कालिनाथ कहता है रूस में केवल किताब लिखकर विप्लव नहीं किया गया। वहाँ के विप्लवी छात्रों ने गाँव-गाँव जाकर लोगों को शिक्षित किया और उन्हें ज़ार के अत्याचार के प्रति जागरूक किया तब जाकर विप्लव सफल हुआ। भारत में ऐसा कुछ नहीं हो रहा। 1972 ई॰ के आसपास भारत के विभिन्न क्षेत्रों में नक्सलवादी सशस्त्र विद्रोह की आग भड़क उठती है। सौमित्र उस विद्रोह में हिस्सा लेकर पुलिस के हाथों बंदी बना लिया जाता है। तेजपुर के जेल में विचाराधीन बंदी के रूप में रहने के दिनों ही समाचार पत्र में सौमित्र पढ़ता है कि कालिनाथ सन् 1972 ई॰ के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार के तौर पर विजयी होकर मंत्री बन गया है। सौमित्र खुद को कहता है –

> आमि दुयो दुखन कारागारत बंदी। केतियाकै आमि मुक्तिलाभ करिम?
>
> (बरगोहाञि 2014:310)

(भावार्थ: हम दोनों दो कारागार में बंदी है। कब हम मुक्त होंगे?)

उपन्यासकार ने भी टिप्पणी की है –

> सौमित्र आरु कालिनाथे निजर निजर कारगारर परा कि अभिज्ञता लै मुक्त है ओलाय आहे तार कारणे आमिओ उदग्र है अपेक्षा करिछोँ।

(बरगोहाञि 2014:310)

(भावार्थ: सौमित्र और कालिनाथ अपने अपने कारागार से क्या अनुभव लेकर मुक्त होकर निकल आए उसके लिए हम भी व्यग्रता से प्रतीक्षा करेंगे ।)

एक पात्र के माध्यम से और खुद अपनी ओर से भी उपन्यासकार कालिनाथ के राजनीति में प्रवेश की तुलना कारागार-प्रवेश से कर रहे हैं। उपन्यासकार के अंत के इन वाक्यों से यह तो प्रमाणित हो जाता है कि राजनीति व्यक्ति को बंधन में बाँध देता है। उपन्यासकार अंत में एक प्रश्न हमारे सामने छोड़ जाते हैं कि - क्या कालिनाथ मंत्री के तौर पर दलगत राजनीति में घुसकर वह सब कुछ कर पायेगा, वह सारा सकारात्मक कार्यकलाप जो उपन्यास में वह करने का प्रयास करता रहा था, जो अपने मन में वह करने की योजना बनाता रहा था। यह प्रश्न इसलिए भी है कि दलगत राजनीति में घुसकर व्यक्ति अपने स्वतंत्र विचार के मुताबिक कार्य करने में अधिकतर समय असमर्थ हो जाता है ।

3. निष्कर्ष :

इस उपन्यास में होमेन बरगोहाञि ने अपनी बातों को बहुत सुंदर ढंग से चित्रित किया है। उनके द्वारा जिस प्रकार की कहानी चुनी गई है वह उनके वक्तव्य को पाठकों के सामने रखने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। बरगोहाञि ने अपने भोगे गए यथार्थ को चित्रित किया है। इस कारण यह उपन्यास विश्वसनीयता और प्रभावोत्पादकता के गुणों से सराबोर है। यह उपन्यास उनकी सर्वाधिक प्रौढ़ कृति है और इसका प्रमाण इस उपन्यास का हर एक प्रसंग देता है ।

टिप्पणी :

इस पत्र में आवश्यकतानुसार 'पिता-पुत्र' उपन्यास की कुछ पंक्तियों का लिप्यंतरण किया गया है। लिप्यंतरण में उच्चारण की अपेक्षा शब्दों की व्युत्पत्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इससे शब्दों की मूल आत्मा सुरक्षित रहेगी। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं- 'च' और 'छ'। असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स','च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिन्दी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिन्दी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं-एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिन्दी में भी 'य' रखा गया है। असमीया 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है।

ग्रंथ-सूची :

बरगोहाञि, होमेन. पिता-पुत्र. गुवाहाटी : स्टूडेंट्स स्टोर्स, 2014.

संपर्क-सूत्र :

शोधार्थी

हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

ई-मेइल : 666mandal@gmail.com

मोबाइल नं॰ : 8135054304